हिन्दी भाषा का भूमंडलीकरण

भूमण्डलीकरण को समतल दुनिया का नाम भी दिया गया है जिससे एक देश से दूसरे देश में आवागमन, सम्पर्क, व्यापार आदि सहज और सामान्य हो सके। भूमण्डलीकरण के समतल होने से देशों के बीच की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि दीवारें टूट रही हैं। इसप्रकार अति विस्तृत कार्यक्षेत्र मिल जाने से प्रत्येक राष्ट्र अपनी मौलिक सभ्यता-संस्कृति को लेकर उभर रहा है तथा इस सभ्यता और संस्कृति के साथ अपने राष्ट्र की भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बना अपनी एक मुकम्मल पहचान बनाने में लगा है।

वैश्विकरण का यह दौर प्रत्येक राष्ट्र के शक्ति परीक्षण का है जिसमें अभिव्यक्तियाँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी तथा जिस राष्ट्र का सम्प्रेषण जितना प्रखर और परिस्थितिजन्य होगा वह राष्ट्र उतना ही शक्तिशाली होगा। अतः भूमंडलीकरण में भाषाओं की वर्चस्वता का अघोषित व अप्रत्यक्ष लड़ाई जारी है।

भूमण्डलीकरण के इस आरम्भिक दौर में हिन्दी स्वयं को विशाल रूप देने में प्रयत्नशील है। हिन्दी के विकास में द्रविड़ीयन, तुर्की, फारसी, अरबी, पुर्तगाली और अंग्रेजी भाषाओं का भी उल्लेखनीय योगदान है। वैश्वीकरण के इस दौर में डिजिटल मीडिया द्वारा हिन्दी को अफ्रीका, मध्य-पूर्व, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में एक चित्ताकर्षक ढंग से लगातार पहुँचाया जा रहा है। दूसरी ओर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दक्षिण एशिया के बाजार में पैठ लगाने हेतु हिन्दी की उपयोगिता में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी करते जा रही हैं। इसका मतलब यह कतई नहीं है कि विश्व में अन्य भाषाएँ अलसाई सी हैं बल्कि विश्व में अपने परचम को लेकर हिन्दी के साथ अग्रणी कतार में दौड़ लगानेवाली जर्मन, फ्रेंच, जापानी, स्पैनिश और चीनी जैसी प्रमुख भाषाएँ भी कदम से कदम मिलाकर एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में दौड़ रही हैं।

विश्व स्तर पर हिन्दी के विस्तार में हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय भूमिका है और अभी भी हिन्दी साहित्य अपनी इस भूमिका को बखूबी निभा रही है। कम्प्यूटर की विभिन्न विधाओं में भी हिन्दी ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। हिन्दी गद्य विधा में अभिव्यक्ति, गर्भनाल आदि जैसी वेब पत्रिकाएँ हैं तथा काव्य में अनुभूति जैसी वेब पत्रिकाएँ हिन्दी साहित्य के बेहतर छवि को निरंतर निखार रही हैं तथा ऐसी कई पत्रिकाओं को विदेशों में एक बड़ा पाठक वर्ग मिला है। भूमण्डलीकरण के इस युग में सूचना और प्रौद्योगिकी के ताल-मेल के बिना हिन्दी के विस्तार की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। अपनी तमाम कठिनाईयों के बावजूद भी हिन्दी ने जिस तरह प्रौद्योगिकी जगत में अपना पैर जमाया है उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा मुक्त कंठ से जितनी ज्यादा की जाए उतना ही कम है। आज व्यक्ति का मोबाईल नंबर जितना जरूरी हो गया है उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है इन्टरनेट। कम्प्यूटर से जुड़े रहने से इन्टरनेट की दुनिया में हिन्दी के फैलते साम्राज्य की नवीनतम जानकारियाँ मिलती रहती हैं। प्रसिद्ध सर्च इंजन गूगल के प्रमुख एरिक स्मिथ का मानना है कि अगले पाँच से दस सालों में हिन्दी इंटरनेट पर छा जाएगी और तथा चीनी के साथ हिन्दी इंटरनेट की दुनिया की प्रमुख भाषा होगी।

हिन्दी चाहे विज्ञापन की भाषा के रूप में हो या किसी अन्य विधा में उसका प्रभाव किसी सीमा तक ही नहीं रहता बल्कि विभिन्न प्रचार-प्रसार माध्यमों से भूमंडल में विस्तृत हो जाता है। संसार के लगभग 190 देशों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। इनमें से बहुत बड़ी संख्या अपनी भाषा भूल चुकी है पर इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि वे हिन्दी सीख नहीं रहे हैं। भूमण्डलीय आकाश पर पैर पसारती हिन्दी अपने कई रूप दिखला रही है तथा यह कहना कठिन है कि किस देश में हिन्दी किस अंदाज़ में होगी ठीक वैसे ही जैसे बंबईया हिन्दी, मद्रासी हिन्दी, लखनवी हिंदी, हैदराबादी

हिन्दी आदि।

यहाँ एक सवाल उठता है कि जब वैश्विक स्तर पर हिन्दी प्रगति दर्शा रही है तो अब तक वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा क्यों नहीं बन पाई? इस समय संसार की छह भाषाएँ - अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन, चीनी तथा अरबी भाषाएँ संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाएँ हैं, तो आखिर क्या कमी है हिन्दी में? इसका केवल यही उत्तर हो सकता है कि हमने अब तक निरंतर गंभीरता से इसपर कारवाई नहीं की है परन्तु भूमण्डलीकरण ने हिन्दी को पहचाना है तथा हिन्दी का भूमण्डल पर गाना-बजाना, साहित्य का रंग-बिरंगा तराना आदि इसे विश्व भाषाओं में एक सयाना का दर्जा दिए जा रहा है। अतः इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुँचना कठिन नहीं रह गया है। चूँकि अब अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी अपनी छाप छोड़ रही है तथा आर्थिक रूप से हमारा देश सतत समृद्ध और सक्षम होते जा रहा है इसलिए लोग अब भारत की ओर मुड़ रहे हैं। हिन्दी बोलने-समझने वालों की संख्या 40 करोड़ के आसपास होने का अनुमान है। इसका एक प्रमुख कारण है रोजगार के अवसर में लगातार वृद्धि। भूमंडल पर हिन्दी दौड़ रही है तथा वायुमण्डल में उड़ रही है साथ ही वह राष्ट्रीय अस्मिता और अस्तित्व को पारदर्शी तौर पर विश्व के समक्ष सफलतापूर्वक रख रही है। हिन्दी अकेले नहीं है बल्कि उसके साथ अन्य भारतीय भाषाएँ भी हैं। भारत देश की उभरती आर्थिक शक्तियाँ हिन्दी भाषा के द्वारा भी मुखरित हो रही है। हमसब के लिए भविष्य में और भी नई चुनौतियाँ हैं जिसके समाधान के लिए हमें अपनी जुगलबंदी को नया आयाम देना होगा।